समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• फरवरी २०२२ • वर्ष ७३ • अंक ०२

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

अध्यक्षीय

माँ पार्वती के दृढ़ संकल्प से प्रेरणा लें!

सम्पादकीय

जहाँ सुमति तंह संपति नाना

आलेख

उच्च शिक्षा : आज की आवश्यकता

रपट

★ राष्ट्रीय अध्यक्ष का कटक दौरा

★ अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विचारगोष्ठी

★ पर्यावरण-समर्थक यात्री हेतु अभिनंदन समारोह

★ बिहार सम्मेलन की गतिविधियाँ

स्वास्थ्य ही धन है

★ उच्च रक्तचाप के लिए कुदरती आहार

★ हीमोग्लोबिन बढ़ाने में सहयोगी आहार

सम्मेलन में नये सदस्यों का स्वागत!

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ फरवरी २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक २

◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** जहाँ सुमति तंह सम्पति नाना	४-५
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** माँ पार्वती के दृढ़ संकल्प से प्रेरणा लें	६
● **रपट –**	
राष्ट्रीय अध्यक्ष का उत्कल दौरा	७
मातृभाषा दिवस पर विचारगोष्ठी	८
बिहार सम्मेलन की गतिविधियाँ	११-१२
पर्यावरण–समर्थक यात्री का अभिनंदन	१३
● **आलेख – नन्दलाल रूँगटा** उच्च शिक्षा : आज की आवश्यकता	१४
● **विविध**	१७-१८
● **देव-स्तुति : डॉ. जुगल किशोर सर्राफ**	१९
● सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत	२०-२२

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com

◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

आदरणीय लोहिया जी,

आपसे फोन पर बातचीत हुई, बहुत अच्छा लगा। आपके संपादकीय लेख मेरे सहित अनेक बंधुवर चाव से पढ़ते हैं। "व्यक्ति एवं समाज" लेख भी महत्त्व का है। आपने सरलतम भाव से गंभीरतापूर्वक लिखा है "जो व्यक्ति सामूहिक दृष्टि से न सोचकर स्वयं के विषय में ही सोचता है, वह समाज का बीमार अंग है।"

समाज विकास में पूर्व अध्यक्षों एवं समर्पित महानुभावों के संस्मरण व प्रेरक प्रसंग अपेक्षित हैं।

आधुनिक परिवेश में समाज को संगठित रखना दुरुह है। सम्मेलन समाज को संगठित व सशक्त रख रहा है सो आप सभी वंदनीय है। आपके संपादकीय में समाज विकास समाज के ताने बाने को जीवंत रख रहा है, आपको हृदयंगम प्रणाम। स्नेहिल कृपा सदैव रखें।

— **आलोक तुलस्यान**, राँची

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।।

— राष्ट्रकवि स्व. रामधारी सिंह 'दिनकर'

जहाँ सुमति तंह सम्पति नाना

हम सभी जानते है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हमारा जीवन एक दूसरे से गुंथा हुआ है। प्रेम और सद्भाव हमारे जीवन में मधुरता के अमृत कण घोलते हैं। औरों के सुख में सुखी होना एवं औरों के दुख को अपना समझ कर दुःख बाँटना, यही मानव की विशेषता है। जयशंकर प्रसाद जी ने इसी भावना को निम्नलिखित पंक्तियों में सुंदरता से पिरोया है –

औरों को हंसते देखो मनु,
हंसो और सुख पायो।
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।

व्यक्तिगत स्वार्थ मनुष्य का विनाशक है। समाज के कल्याण के बिना स्वयं का कल्याण संभव नहीं है। मनुष्य को चाहिए अपने मैं का विस्तार करके 'हम' में विलीन कर दे। यह बहुत ज्यादा वर्षो पहले की बात नहीं। कुछ वर्षों पहले तक भी समाज में संयुक्त परिवार का चलन था। गाँव एवं छोटे शहरों में सभी परिवार एक दूसरे के सहायक की भूमिका स्वतः स्फूर्त भाव से सहर्ष निभाते थे। बदलते परिवेश के आवश्यकताओं के कारण नौकरी या काम धंधे की खोज में अलग-अलग जगहों पर जाने एवं रहने की मजबूरी हो गई है। उसके अलावा भी अधिकांशतः यह देखा जा रहा है कि व्यक्ति की मानसिकता में प्राथमिकता व्यक्तिगत स्वार्थ को ही मिलती हैं, व्यापक हित की बात धूमिल हो रही है। इसी कारण समाज में आपसी संबंध की डोर ठीली होती गई। यह बात हमारे समझ से बाहर होती गई कि संयुक्त परिवार के अनेकों फायदे एवं विशेषताएँ है। बस थोड़ा समझ या कहे कि सुमति की आवश्यकता है। सुमति के फायदों का विश्लेषण गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने इन पंक्तियों मे किया है —

सुमति कुमति सब के उर रहहीं।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं।।
जहाँ सुमति तंह सम्पति नाना,
जहाँ कुमति तंह विपत्ति निधाना।।

भावार्थ – हे नाथ, पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि सुबुद्धि और कुबुद्धि सबके हृदय में रहती है। जहाँ सुबुद्धि है, वहाँ नाना प्रकार की सुख की स्थितियाँ रहती हैं और जहाँ कुबुद्धि रहती है, वहाँ नाना प्रकार के विपत्ति स्वरूप दुख रहते हैं।

अतः व्यक्ति को सभी परिस्थितियों में सुख शांति का अहसास तभी होगा जब वह अपनी सुबुद्धि से काम लेगा। सुबुद्धि की महता हम एक कहानी से समझ सकते हैं। एक बार एक सेठ ने नींद में स्वप्न देखा – एक स्त्री उनके घर से निकल कर जा रही थी। उन्होने पूछा — हे देवी, आप कौन हैं? मेरे घर आप कब आई और आप कहाँ जा रही हैं? वह स्त्री बोली – मैं तुम्हारे घर की लक्ष्मी हूँ। कई वर्षो से मैं तुम्हारे घर में वास करती आ रही हूँ। चूँकि अब मेरा समय पूरा हो गया, इसलिये मैं जा रही हूँ। मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ, क्योंकि तुमने मेरा सदुपयोग किया। संतो की सेवा की, लोक कल्याण के कार्य किये। जाते समय मैं तुम्हें वरदान देना चाहती हूँ, तुम माँग लो। यह सुनकर सेठजी असमंजस मे पड़ गये। उन्हें कुछ भी नहीं सूझ रहा था। उन्होंने कहा – आप एक दिन के लिये रुक जाईये। अपने परिवार से पूछ कर मैं आपको कल बता दूँगा।

सुबह उठकर सेठजी ने अपने घरवालों को स्वप्न की बात बताई। पत्नी बोली – लक्ष्मी जी से सोना-चाँदी, अन्न-धन माँग लो। सेठजी की बहू बचपन से ही सत्संग में जाया करती थी, उसने कहा – पिताजी, लक्ष्मीजी तो जायेगी ही, एवं जो भी वस्तु हम उनसे माँगेगे, कभी न कभी तो समाप्त हो जायगी। सोना-चाँदी, रुपयो-पैसों का ढेर माँगेंगे तो हमारे बच्चे अहंकारी एवं आलसी हो जायेंगे। अतः लक्ष्मीजी से आप माँग लीजिये कि हमारे घर सज्जनों की सेवा-पूजा, हरि-कथा होती रहे। हमारे परिवार के सदस्यों में आपसी प्रेम बना रहे, क्योंकि प्रेम रहेगा तो विपत्ति आने पर भी हम मिल-बाँटकर सहन कर लेंगे। दूसरे दिन स्वप्न में फिर से लक्ष्मीजी आईं। सेठजी ने कहा – माँ लक्ष्मी, आपको जाना है, तो आप प्रसन्नतापूर्वक जाईये। जाते-जाते मुझे यह वरदान देकर जायें कि मेरे घर सदैव हरिकथा एवं संतो की सेवा होती रहे एवं हमारे घर के सदस्यों में आपसी प्रेम बना रहे। सुनकर लक्ष्मीजी चौंक गई। उन्होंने कहा – जिस घर में संतो की आवभगत एवं हरिकथा होती हो एवं जिस परिवार के सदस्यो में परस्पर प्रीति रहे, उस घर को तो मैं चाहकर भी छोड़ कर नहीं जा सकती। यह वरदान माँगकर तुमने मुझे विवश कर दिया कि मै इस घर को छोड़कर नहीं जा सकती।

इस प्रकार हम समझ सकते है कि जब हम प्रत्येक बात का कार्य-कारण जानकर, अच्छे-बुरे पहलू और परिणाम सोचकर सुबुद्धि से निर्णय लेते हैं तो हम अपने परिस्थितियों, संबंधों एवं जीवन के बीच सुमधुर सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम होते हैं।

आज स्थिति यह है कि मनुष्य अपने जीवन का संचालन तेज गति से कर रहा है। सोच विचार का अधिक अवकाश नहीं हैं। साथ ही साथ जीवन के वास्तविक स्वरूप से हम भटक कर दूर होते जा रहे हैं। आपसी प्रेम एवं विश्वास के अभाव में परिवार बिखर रहे हैं। भाई-भाई में अनबन एक आम बात हो गई है। पहले कहावत थी – **बैठनो भायां के बीच, चाहे बैरही हो**। अब यह माना जाने लगा है कि – भाई का भाई अलग होता आया है, इम कोई नई बात कोनी। कहावत चल पड़ी है कि एक माँ-बाप सात बच्चों को पाल पोस कर बड़ा कर देते हैं, पर सात बच्चे एक माँ-बाप की समुचित देखभाल नहीं करते। घर में ननद-भाभी, देवर-भाभी, देवरानी-जिठानी के रिश्ते हों, इनमें से मधुरता का रस क्षीण होता जा रहा है। वृद्धाश्रम की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। ऐसी बुरी हालत के चलते सरकार को माता-पिता के अधिकारों की रक्षा

के लिए नाना प्रकार के कानून बनाने पड़ रहे हैं। कहा जाता है कि अगर माँ-बाप के देखभाल की जिम्मेदारी बेटी पर हो तो उन्हें वृद्धाश्रम नहीं जाना पड़ेगा। किन्तु एक बात हमें सोचने को मजबूर कर देती है कि वही बेटी बहू बनकर जिस घर में जाती है, वहाँ पर वृद्ध माँ-बाप की अवहेलना होती है। इस संबंध में एक लघुकथा का स्मरण हो रहा है। दो समधन वृद्धाश्रम में मिली, कौन किसको दोष दे। कथा समाप्त।

पति-पत्नी स्वेच्छा से समाज एवं परिवार से कट कर भी सुखी नहीं हैं। आपसी संबंधो में तनातनी बनी रहती है। वैवाहिक संबंधो का मिजाज ऐसा है कि आरोप-प्रत्यारोप के बीच रिश्तों में दरार पड़ जाती है। रिश्तों की दीवार धँसने लगती है। लड़के के परिवार वाले मूकदर्शी बने रहने को मजबूर हैं। लड़की के परिवार वालों की नजर मे सब कुछ लड़कों के परिवारवालों का किया कराया होता है। जब पति-पत्नी का रिश्ता निरर्थक हो जाता है तब सास-ससुर, जेठ-जिठानी, देवर-देवरानी की क्या बात? इस कारण जीवन मे आये रिक्तता को भरने मायके की हाटलाइन, बहनों एवं भाभियों की सहानुभूति जगह भरती हैं। लिखते हुए मैं दो बार सोच रहा हूँ पर जीवन के सच को बयान करना ही लेखक का कार्य है। इसीलिये यह लिखना पड़ रहा है कि आज की लड़कियाँ बड़ी मुश्किल से पत्नी तो बन जाती है, बहू बनने को बिलकुल भी तैयार नहीं। यह एक फैशन बनता जा रहा है कि बहू को बेटी मानो। जो व्यक्ति इस प्रकार की बातें करते हैं उन्हे बहू के पद का महत्व नहीं मालूम। इस परिस्थिति से निजात तभी मिलेगा जब हमारी कुमति को सुमति में बदलेंगे। स्वस्थ रिश्तों के लिए सर्वप्रथम इसके महत्व को समझना होगा। स्वस्थ रिश्तों में सभी पक्ष एक दूसरे के प्रति अच्छे विचार पैदा करते हैं। इन विचारों का आपस में आदान-प्रदान करते हैं। शारीरिक, वित्तीय, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्तर पर अधिक से अधिक एक दूसरों को लाभ पँहुचाने का प्रयास सभी सदस्यों को करना चाहिए। जब भी एक रिश्ते में एक दूसरे पर गलत प्रभाव डालने की कोशिश करते हैं तो टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। परस्पर वार्ता का सूत्र टूट जाता है। एक दूसरे के मनोभाव स्वयं ही भांप कर उसे ही सत्य मान लेने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, जो कि विध्वंसकारी है। दूसरे को अपने अनुसार आंकने की बजाय जो जैसा है उसे उसी प्रकार स्वीकार करने की आवश्यकता होती है। एक दूसरे को नीचा दिखाने में मशगुल हो जाते हैं। स्वस्थ संबध ही खुशी एवं सुख का स्त्रोत है। संबंधो में तिक्तता लाकर अगर अन्य कुछ लाभ मिलता है, तो वह दीर्घ एवं कल्याणकारी नहीं होता। स्वस्थ संबंध ही परस्पर कल्याण को बढ़ावा देते है। आपसी संबंधों में कर्त्तव्य, जिम्मेदारी एवं अधिकार का सामंजस्य होना चाहिए। आपसी समझ, पारदर्शिता, परस्पर ईमानदारी, सकारात्मकता, विश्वास, और परस्पर सम्मान एवं स्नेह जीवन में खुशियों के रंग भरते हैं। सभी को एक दूसरे की बात कहने का मौका मिलना चाहिए एवं सभी की भावना की कद्र होनी चाहिए। समस्या का जड़ है कि हर व्यक्ति अपने जैसा स्वभाव वाले एवं अपने जैसा उद्देश्यवाले को ढूँढ़ता है। जबकि प्रकृति ने सबको अलग स्वभाव, अलग उद्देश्य और अलग आदतें प्रदान की है। इन गलत अवधारणाओं के चलते मनुष्य अपनी कुमति के कारण स्वयं को दुखी कर लेता है। जहाँ अनेक बर्तन होंगे वे आपस मे टकारायेंगे। कुछ आवाज भी होगा। परन्तु उसमें कोई विद्वेष की भावना उपस्थित नहीं रहती। मानव मन में द्वेष जैसी भयंकरता उत्पन्न करता है, वैसी कोई दूसरी वस्तु नहीं करती। धम्मपद उपदेश देता है कि यहाँ संसार में वैमनस्य से वैर कभी शांत नहीं होता, अवैर से ही शांत होता है। यही सनातन धर्म है। एक घुड़सवार कहीं दूर जा रहा था। बहुत देर से पानी नहीं मिलने से घोड़ा प्यास से बेहाल था। थोड़ी देर बाद उसे सामने खेत में रहट चलता दिखाई दिया। रहट बहुत जोर से टक-टक-टक की आवाज कर रहा था। आवाज से घबड़ाकर घोड़ा बार-बार पीछे हट जाता। घुड़सवार ने खेत के मालिक से कहा कि थोड़ी देर के लिये रहट बंद कर दें, ताकि थोड़ा पानी पी सके। हँसते हुए खेत के मालिक ने कहा कि – रहट बंद कर दूँगा तो पानी आना ही बंद हो जायगा। अगर पानी पीना हैं तो टक-टक-टक में ही पानी पीने का अभ्यास करना होगा। यह घुड़सवार और कोई नही, हमारा मन है। हमें इस मन को समझाकर रखना होगा। अपना विवेक और संयम बनाकर सबके प्रति प्रेम एवं सद्‌भाव की भावना के साथ हमें जीवन-यापन करने की आदत डालनी होगी। हमारे साथ जो भी होता है, उसे अच्छा या बुरा मानना हमारे सोच पर निर्भर करता है। अगर हम यह सोचेंगे कि हमारे साथ बुरा हो रहा है, तो दुखी रहने की संभावना सदा बनी रहेगी। अगर यह सोचें कि जो भी हो रहा है वह भगवान की इच्छा है तो इसमें सुखी रहने की संभावना अधिक रहेगी। आपसी प्रेम-भाव एवं विश्वास सर्वोपरि है, जो संबंधो को जोड़कर रखता है। अयोध्या मे महाराज दशरथ के यहाँ सुमति थी। भाई–भाई में प्रेम था, पिता-पुत्र में प्रेम था। राजा-प्रजा में प्रेम था। सास–बहू में प्रेम था, मालिक-सेवक में प्रेम था। अयोध्या उजड़कर फिर से बस गई। उधर लंका में कुमति थी। कुमति और अनीति के कारण रावण का पतन हो गया। गुरु वाणी में आता है – इक लख पूत, सवा लख नाती, ता रावण घर दीया न बाती। पाँच पाण्डवो में सुमति थी। उन पर विपदाएँ आई, लेकिन उन्होंने एकजुट रहकर उन विपदाओं से त्राण पाया।

जैसे स्वस्थ शरीर के लिये पौष्टिक आहार जरूरी है, वैसे ही स्वस्थ मन के लिए शुद्ध विचार जरूरी है। समाज एवं परिवार को स्वर्ग बनाने के लिये आवश्यकता है – प्रेम, स्नेह, आत्मीयता, एक दूसरे को समझने की भावना, कर्त्तव्यपरायणता। इन सब फूलों से हमारे जीवन का गुलदस्ता सजा रहेगा तो हमारी सुख-शान्ति कोई भी छीन नहीं पायेगा। दूसरों को सुखी सम्पन्न देखकर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य न करके उनके आनंद में शामिल होना ही सुखी रहने का फार्मूला है। यदि कहीं दुख, दैन्य, कष्ट, पीड़ा, हताशा–निराशा है तो उसमें भी साथ दो। इस विधि सुख का द्वार खुल जायेगा। सुमति से हमारे जीवन की मुरली से हर्षोल्लास के मधुर संगीत फूट पड़ेंगे।

शिवकुमार लोहिया

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

माँ पार्वती के दृढ़ संकल्प से प्रेरणा लें

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

स्नेही बन्धुगण,

आप सभी स्वस्थ रहें, सुखी रहें, सानंद रहें और प्रभु-कृपा से मौज में रहें। फागुन माह है, वसंत अपने पूर्ण यौवन पर है। रंग–बिरंगे फूल अपनी सुवास से वातावरण मदमस्त कर दे रहे हैं। पलाश अपना रंग बिखेर रहा है। पलाश जहाँ खिले हैं, लगता है धरती माँ ने लाल साड़ी पहन ली है। फागुन का माह ऋतु–परिवर्तन का संदेश भी देता है। शीत वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया है। वसंत की मादकता सब ओर छाने लगी है।

फागुन कृष्ण चतुर्दशी को शिव–पार्वती का विवाह भी है, जिसे हम महाशिवरात्रि कहते हैं। शिव सरल हैं, शुद्ध हैं, निष्कपट हैं, एकांतवासी हैं, दुनियादारी से दूर, कामनारहित, संस्कृति के नियमों, विधि–विधानों तथा परंपराओं से निर्लिप्त हैं। दूसरी तरफ वे महाशक्तिशाली हैं। मृत को भी जीवन प्रदान करने की उनमें शक्ति है। उनके पास संहार शक्ति है पर भोले इतने हैं कि भस्मासुर को वरदान देकर उसके आघात से बचने के लिए भागे–भागे फिरते हैं तथा फिर विष्णु को याद करते हैं। वे चाहते तो स्वयं ही उसे भस्म कर सकते थे। विष्णु मोहिनी रूप धरकर उसका काम तमाम कर देते हैं। यह जानते हुए भी कि मोहिनी श्री हरि विष्णु ही हैं, उसकी सुंदरता पर मोहित होकर उसे आलिंगन में भर लेते हैं।

पार्वती के रूप में सती का पुनर्जन्म है। शिव को पति रूप में चाहना उसकी स्वाभाविक मनोकांक्षा है। शिव को पाने के लिए उसने घोर तपस्या की। देवताओं से भी प्रार्थना की शिव को जगाने के लिए। शिव लंबे काल से समाधि में थे। पार्वती के साथ मिलकर देवगण कामदेव से सहायता माँगते है। कामदेव तैयार होते हैं। वे तोते की सवारी करते हैं, उनके हाथ में तीर–कमान है। कमान गन्ने से और डोरी मधुमक्खियों से बनी है। तीर फूलों से बने हैं जिनसे वे पंचेन्द्रियों को आकृष्ट करते हैं। कामदेव का साथी वसंत ऋतु है और साथिन रति जो काम की देवी है। शिव को कामासक्त करने के लिए कामदेव अपना तीर चलाते हैं पर शिव प्रभावित नहीं होते। वह केवल अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं। उसमें से अग्नि की लपट निकलती है और कामदेव को भस्म कर देती है। पार्वती और रति दोनों अचम्मित हो जाते हैं। परंतु पार्वती हार मानने को तैयार नहीं है। वह शिव की दोनों आँखें खुलवाने के लिए दृढ़ संकल्पित है – अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा।

वह कठोर तपस्या का व्रत लेती है। बिना खाए–पीए कड़ाके की ठंड में एक अंगूठे पर खड़े होकर एकाग्र चित्त से शिव का ध्यान करने लगती है। अपने शरीर को तरह–तरह के कष्ट देती हुई शिव की आराधना एवं ध्यान में लगी रहती है। वह एकनिष्ठ है तथा दृढ़ संकल्पित है। **आदमी दृढ़ संकल्पित होकर कोई कार्य करे तो कुछ भी असंभव नहीं है।** शिव पार्वती के तप से प्रभावित होते हैं। वर माँगने को कहते हैं। पार्वती कहती है कि पिछले जन्म में आप मेरे पति थे, इस जन्म में भी मैं आपका ही वरण करूँगी। शिव पार्वती की ओर ध्यान से देखते हैं एवं उसे सती के रूप में पाते हैं। वे पार्वती को स्वीकार करते हैं। यही दृढ़ संकल्प का फल है।

सती साध्वी थी, वैराग्य ले रखा था। परंतु पार्वती गृहस्थी बसाना चाहती है। पार्वती शिव को गृहस्थ बनाने में सफल हो जाती है। इसलिए देवी को कामाख्या या कामाक्षी भी कहते है। देवी साथ रहने के लिए घर की माँग करती है। शिव को इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं होती। गर्मी, ठंड, बरसात हर ऋतु में घर आवश्यक है परंतु शिव बरगद के वृक्ष की छांव गर्मी के लिए, शीत में मरघट में चिताओं के जलने की गर्मी और बरसात में बरसात से बचने के लिए पार्वती को साथ ले बादलों के ऊपर उड़ जाते हैं। वह समझ गई कि भोले भंडारी उसका मन्तव्य समझ नहीं पा रहे हैं। पार्वती की भावना का सम्मान करते हुए शिव घर बनवाते हैं। शिव पार्वती के ऐसे कई प्रसंग है जहाँ शिव भोले और अनजान हैं, पर पार्वती उन्हें गृहस्थ बनाकर छोड़ती है।

हमारे ऋषि–मुन्नियों ने त्योहारों की रचना मानव को प्रेरित करने के लिए की थी, जितने भी त्योहार हैं हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं प्रेरक हैं।

शिव परिवार अनूठा, अतुलनीय, प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। बैल, सिंह, सर्प, मूषक और मोर – सब एक-दूसरे के वैरी, पर कहाँ वैमनस्य है? सब एक जगह बड़े प्रेम से रहते हैं। वहाँ सौहार्द है, सदभावना है, स्नेह है। हमलोगो के लिए बड़ी सीख है। हमारे यहाँ परिवार में सामंजस्य नहीं है। आपस में कलह, इर्ष्या, द्वेष, अनबन तथा मनमुटाव आम बात है। सास बहू में नहीं बनती, जेठानी देवरानी से डाह करती है, पति पत्नी में अनबन रहती है, छोटे बड़ों को सम्मान नहीं देते, बेटे बाप को बेवकूफ और पुराने जमाने का समझते हैं। भाई-बहन में दिखावे का मेल है, अन्तस से प्रेम नहीं। न सौहार्द है, न सद्भावना है, न समझौते को कोई राजी है। सब स्वयं को सर्वोच्च समझते हैं। इसलिए ही परिवारों में विघटन होता है। परिवार सिमटते जा रहे हैं। शिव परिवार से हमें यह सौहार्द की भावना सीखने की आवश्यकता है। शिव परिवार पूरे समाज के लिए अनुकरणीय है।

इतना सब वर्णन करने का उद्देश्य यही है कि दृढ़ इच्छाशक्ति से हर काम संभव हो जाता है। शिव जैसे कामनारहित वैरागी को भी गृहस्थ बनाया जा सकता है। मन अगर पुनीत और सात्विक है तो भगवान को भी झुकना पड़ता है। 'सत्यम शिवम् सुंदरम' यह वाक्य अपने आप में परिपूर्ण है।

वसंत के ऊपर कवियों ने अनेक कविताएँ लिखी हैं। **महाकवि पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** की एक कविता की कुछ पंक्तियों उद्धृत करता हूँ।

सखि वसंत आया।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।

किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु–पतिका
मधुप-वृन्द बन्दी–पिक–स्वर नभ सरसाया।

जिस प्रकार वसंत आने पर प्रकृति हर्ष से प्रफुल्लित हो उठती है, वृक्षों में नए-नए पल्लव निकल आते हैं, नवोत्कर्ष छा आता है, उसी तरह हमें भी अपने कार्यों को नए उत्साह के साथ लगकर पूरा करना है। **माँ पार्वती का दृढ़ संकल्प और वसंत का नवोत्कर्ष हमारी प्रेरणा बनें। हममें नई ऊर्जा, नई उमंग, नया उत्साह जागृत हो।** वसंत में प्रकृति अति सुंदर, मोहक और सुवासित रहती है जैसे प्रकृति का कायाकल्प हो गया हो। हममें भी नव सृजन की ऐसी शक्ति का संचार हो। हमारा भी कायाकल्प हो।

अगले माह होली है। सभी प्रेम एवं सौहार्द से होली खेलें। आप सभी को होली की अग्रिम शुभकामनाएँ!

जय समाज, जय राष्ट्र!

समाजसेवा के कार्यों में कटक शाखा की सक्रियता सराहनीय : गोवर्धन गाड़ोदिया

गत १२ फरवरी २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने कटक (ओडिशा) का संगठनात्मक दौरा किया। इस अवसर पर उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की कटक शाखा द्वारा स्थानीय रघुनाथ मंदिर के समीप स्थित उनके कार्यालय परिसर में एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया ने अपने उद्बोधन में कटक शाखा द्वारा समाजहित में किए जा रहे सेवाकार्यों की प्रशंसा की और कहा कि कटक शाखा समाज के कल्याण, विकास एवं उत्थान हेतु निरंतर कार्यरत है और शाखा की सक्रियता प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समुदाय का हर वर्ग एक सुंदर पुष्प है और उन सभी पुष्पों को मिलाकर सम्मेलन एक गुलदस्ता है। उन्होंने **“संस्कारों की नाव पर, समय की धार पर”** के अनुसार मारवाड़ी संस्कार–संस्कृति एवं परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए आचरण करने एवं भावी पीढ़ियों को भी इनके प्रति जागरूक रखने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन गाड़ोदिया ने कटक और आसपास की शाखाओं के उपस्थित पदाधिकारियों से सम्मेलन के संगठन एवं विभिन्न गतिविधियों के विषय में विस्तृत विचार–विमर्श किया।

समारोह में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कटक मंडलीय उपाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल, कटक शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री सुर्यकांत सांगानेरिया, अध्यक्ष श्री सुरेश कमानी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री पवन तयाल, भुवनेश्वर शाखा के अध्यक्ष श्री उमेश खंडेलवाल, अंगूल शाखा के अध्यक्ष श्री रमेश साह, विशिष्ट समाजसेवी डॉ. किशन लाल भरतिया, सर्वश्री जितेन्द्र गुप्ता, मोहन लाल सिंघी, सत्यनारायण भरालेवाला, सचिन उदयपुरिया, पदम् भावसिंक, पुरुषोतम अग्रवाल, श्याम सुन्दर गुप्ता, हनुमान मल सिंघी, राजेश अग्रवाल, योगेश सिंघी, मनसुख सेठिया, श्याम सुन्दर अग्रवाल, नंदकिशोर जोशी, बजरंग चिमनका, प्रकाश अग्रवाल, बिजय अग्रवाल, जोगेंदर अग्रवाल, राजकुमार सुल्तानिया, प्रतिभा सिंघी, कमल मुन्नाभाई अग्रवाल, विनोद मुन्नाभाई अग्रवाल, मनोज विजयवर्गीय, काशीनाथ बथवाल, कमल वशिष्ठ, नवीन पूगलिया, कैलाश पारिख, प्रेम पारिख, श्रीमती रमा बजाज, श्रीमती चंदा देवी संतुका, श्रीमती बबीता अग्रवाल, श्रीमती संध्या अग्रवाल, श्रीमती उषा लाडसरिया आदि उपस्थित थे। कटक शाखा के उपाध्यक्ष श्री सुभाष केडिया ने मंच संचालन किया।

कोल इंडिया चेयरमैन से मिला सम्मेलन का प्रतिनिधिमंडल

गत ०३ फरवरी २०२२ को कोल इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन श्री प्रमोद अग्रवाल, आई.ए.एस. से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय कुमार हरलालका, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्रीद्वय श्री गोपाल अग्रवाल तथा श्री सुदेश अग्रवाल ने कोलकाता स्थित उनके मुख्यालय में जाकर मुलाकात की और स्टार्टअपलेन्स देश के टॉप ४० सी.ई.ओ. में अनेक नामित होने पर उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया द्वारा प्रेषित बधाई–पत्र सौंपा एवं गत दीपावली प्रीति मिलन समारोह की तस्वीरों का एल्बम प्रदान किया। ध्यातव्य है कि श्री प्रमोद अग्रवाल इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुलाकात के दौरान देश-समाज के विभिन्न विषयों पर प्रतिनिधिमंडल ने उनसे विचार–विमर्श किया। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने कहा कि उच्च पदस्थापित होने के बावजूद उनकी सरलता एवं विनम्रता अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद है।

रामस्वरूप किसान और दमयन्ती जाडावत 'चंचल' को मिलेंगे मारवाड़ी सम्मेलन के राजस्थानी भाषा सम्मान

गत २१ फरवरी २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित सभागार में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर '**मायड़भाषा : दशा और दिशा**' विषयक संगोष्ठी का आयोजन सम्मेलन एवं **राजस्थानी प्रचारिणी सभा** के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

विचारगोष्ठी में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने सबका स्वागत-अभिनंदन किया और कहा कि यह खेदजनक है कि हमारे सतत् प्रयासों के बावजूद राजस्थानी भाषा को अब तक संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता नहीं मिली है। उन्होंने स्वयं और अपने परिवार से प्रारम्भ कर हर स्तर पर राजस्थानी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पुरस्कार चयन समिति के संयोजक **श्री संतोष सराफ** ने बताया कि चयन समिति के चेयरमैन **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** के सभापतित्व में विस्तृत विचार–विमर्श के पश्चात् हनुमानगढ़, राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकार **श्री रामस्वरूप किसान को सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा–साहित्य सम्मान** एवं राजसमन्द, राजस्थान की प्रतिभावान लेखिका **श्रीमती दमयन्ती जाड़ावत 'चंचल' को केदारनाथ भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल–साहित्य सम्मान** देने का निर्णय लिया गया है। ज्ञातव्य है कि राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि हेतु ये सम्मान सम्मेलन द्वारा प्रतिवर्ष दिए जाते हैं और ये पुरस्कार वर्ष २०२० के लिए हैं।

श्री रामस्वरूप किसान

श्रीमती दमयन्ती जाड़ावत 'चंचल'

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि राजस्थानी भाषा के प्रति समाज और सरकार का रवैया उदासीनता का रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा की मान्यता हेतु सम्मेलन लम्बे समय से प्रयासरत है और सफलता मिलने तक इसे छोड़ेगा नहीं। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री नंदलाल रूँगटा** ने राजस्थानी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु नारीशक्ति और युवाशक्ति को इस मुहिम से जोड़ने की सलाह दी। उन्होंने राजस्थानी भाषा की उन्नति के प्रयासों में **स्व. जुगल किशोर जैथलिया** और **श्री रतन शाह** की भूमिका को सराहा।

विचारगोष्ठी का संचालन करते हुए सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राजस्थानी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री रतन शाह ने सविस्तार अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की पृष्ठभूमि बताई। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज की पहचान उसकी भाषा है। भाषा मूल है, पानी है, अगर यह जिन्दा है तो आपकी संस्कृति, गीत–संगीत जिन्दा है। संयुक्त राज्य अमेरिका से बैठक में शामिल **डॉ. शशि शाह** ने कहा कि भाषा हमें बाँधकर रखने का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा में पढ़ाई न होने के कारण विश्व में चालीस प्रतिशत लोग अशिक्षित रह जाते हैं।

न्यायमूर्ति **श्री रमेश मेरठिया** ने हर स्तर पर इस प्रकार की विचारगोष्ठियों तथा राजस्थानी साहित्य के विभिन्न विधाओं में प्रतियोगिताओं के आयोजन पर बल दिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री भानीराम सुरेका** ने सहयोगी मारवाड़ी संस्थाओं को इस अभियान से जोड़ने की बात कही। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री पवन गोयनका** ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने हमें बहुत अच्छी भाषा दी है जिसे संजोकर रखना और यथासम्भव बेहतर करके अपनी अगली पीढ़ी को देना हमारा नैतिक दायित्व है। कवियित्री **श्रीमती शशि लाहोटी** ने मधुर स्वर में कवितापाठ किया जिसे सबने सराहा। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने भाषा और संस्कृति को अन्योनाश्रय बताया। **डॉ. सुभाष अग्रवाल, श्री आत्माराम सोन्थलिया, श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री राज कुमार केडिया** आदि ने भी अपने संक्षिप्त विचार रखे।

धन्यवाद–ज्ञापन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने कहा कि राजस्थानी भाषा की मान्यता हेतु अपनी बात सही जगह पहुँचाने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। विचारगोष्ठी में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री विजय लोहिया, संयुक्त महामंत्रीद्वय श्री गोपाल अग्रवाल एवं श्री सुदेश अग्रवाल, संगठन मंत्री श्री बसन्त मित्तल, कोषाध्यक्ष श्री दामोदर बिदावतका, पूर्व कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी, सर्वश्री प्रह्लाद राय गोयनका, रतनलाल अग्रवाल, पवन जालान, महेश जालान, नंदलाल सिंघानिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, रतनलाल बंका, राजकुमार तिवाड़ी, अशोक अग्रवाल, अरुण अग्रवाल, पवन पसारी, प्रेमलता खण्डेलवाल, छत्तर सिंह गिड़िया, संदीप सेक्सरिया सहित पूरे देश से समाजबंधु जूम के माध्यम से जुड़े थे।

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments
- Radiology
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- Cardiology
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- Wide Range of Pathology
- Pulmonary Function Test
- UGI Endoscopy / Colonoscopy
- Physiotherapy
- EEC / EMG / NCV
- General & Cosmetic Dentistry
- Elder Care Service
- Sleep Study (PSG)
- EYE / ENT Care Clinic
- Gynae and Obstetric Care Clinic
- Haematolgy Clinic
- Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep
- Health Check-up Packages
- Online Reporting
- Report Delivery

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ

प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, वरिष्ठ समाजबंधुओं और ग्रामीण शाखाओं के नाम रहा फरवरी २०२२ माह

बिहार राज्य के बजट पर प्रतिक्रिया और बसंतपंचमी की शुभकामनाओं के साथ फरवरी महीने की शुरूआत हुई। १० फरवरी को चार्टर्ड अकाउंटेंसी की परीक्षा के परिणामों की घोषणा के साथ पूरे प्रदेश में खुशी की लहर दौड़ गई। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार प्रदेश में सफल मारवाड़ी समाज के छात्रों की सूची प्रकाशित की गई। **बिहार में समाज के लगभग १३० छात्र-छात्राओं ने सीए की अंतिम परीक्षा में सफलता प्राप्त की।**

तत्काल १३ फरवरी को पूरे प्रदेश में प्रतिभा पर्व आयोजित करने का निर्णय लिया गया। पटना सहित मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, सुरसंड, कुशेश्वर स्थान, दरभंगा, खगड़िया, बेगूसराय, जलालगढ़, झंडापुर आदि शाखाओं के **पदाधिकारियाँ/सदस्यों ने सफल प्रतिभागियों, के आवास और कार्यालय में जाकर उन्हें सम्मानित किया।** इसका समाज में बहुत सकारात्मक संदेश गया।

इसी दिन विश्वप्रसिद्ध 'सुपर थर्टी' के संस्थापक **प्रोफेसर आनंद कुमार** के साथ जूम पर मारवाड़ी समाज के छात्रों और युवाओं के लिए **कैरियर सेमिनार** का आयोजन किया गया।

फरवरी २० से २७ के बीच शाहपुर पटौरी, ढलसिंहसराय, बलिया, पचवीर, गोगरी जमालपुर, महेश खूँट, खगड़िया, बखरी, गढ़पुरा, मंझौल, बरौनी और मुंगेर शाखाओं की संगठन यात्रा की गई। **शाहपुर पटोरी में प्रदेश की १६०वीं और महेश खूँट में १६१वीं शाखा गठित की गई** तथा अनेक स्थानों पर कई वर्षों से निष्क्रिय चल रही पुरानी शाखाओं का पुनर्गठन किया गया। संगठन यात्रा के क्रम में गाँवो-कस्बों और शहरों में समाज के अनेक वरिष्ठ महिला-पुरुष अभिभावकों को सम्मानित किया गया।

२० फरवरी को संगठन यात्रा से पटना वापस लौटने के क्रम में देर रात मुजफ्फरपुर में श्री गोविंद ड्रोलिया की नृशंस हत्या की जानकारी मिलते ही बीच रास्ते से वापस लौट कर मुजफ्फरपुर में घटनास्थल पर पुलिस अधीक्षक श्री जयंत कांत से व्यवसायी वर्ग की सुरक्षा की माँग की गई। परिणामतः २७ फरवरी को ही उनके शूटर गिरफ्तार कर लिए गए और व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता में हत्या की बात सामने आई।

संगठन यात्राओं के क्रम में खगड़िया में दुलारी कथा भवन को विस्तृत और आधुनिक रूप देकर समाज के लिए अधिक उपयोगी बनाए जाने के प्रकल्प परीक्षण किया गया। ग्रामीण शाखा बखरी के द्वारा स्थापित मोक्ष धाम और श्री कृष्ण गौशाला का भ्रमण अति अल्प साधनों के बावजूद भी शाखा की मजबूती और सक्रियता सिद्ध कर गया।

२१ फरवरी को मायड़ भाषा दिवस के अवसर पर समस्त

संगठन यात्रा के दौरान मुंगेर प्रमंडल मुख्यालय शाखा में समाजबंधुओं के साथ बैठक

बिहार सम्मेलन की १६०वीं शाखा "शाहपुर पटोरी" गठित

बिहार सम्मेलन की १६१वीं "महेश खूँट शाखा" का गठन

मुजफ्फरपुर के युवा व्यवसायी श्री गोविंद ड्रोलिया की नृशंस हत्या के उपरांत पुलिस अधीक्षक श्री जयंत कांत से सुरक्षा की माँग करते प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान।

थैलेसीमिया से बचाव के लिए जन-जागरूकता अभियान
"नन्हें देवदूत" प्रादेशिक कार्यक्रम का लोकार्पण

मिशन बागबान के अंतर्गत गढ़पुरा के लब्धप्रतिष्ठ समाजसेवी
९२ वर्षीय श्री किशुन लाल सिंघानिया का सम्मान

समाजबंधुओं से अपने घर-परिवार में और रिश्तेदारों से मारवाड़ी में वार्तालाप करने का अनुरोध किया गया।

२५ फरवरी को पटना में **नवस्थापित माँ ब्लड बैंक में प्रथम रक्तदान प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान के द्वारा असम** से आए एक समाजबंधु के लिए किया गया।

२७ फरवरी को बेगूसराय शाखा के आतिथ्य में प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति की चतुर्थ बैठक 'अवलोकन' का आयोजन किया गया। विभिन्न विषयों पर लगभग ७० उपस्थित सदस्यों ने गंभीर विचार-विमर्श किया और समीक्षा के उपरांत आगे की दिशा निर्धारित की। कई संविधान संशोधन संबंधी प्रस्ताव भी पारित किए गए। इसी बैठक के दौरान थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों के प्रति जन-जागरूकता अभियान **"नन्हें देवदूत"** प्रान्तीय कार्यक्रम का लोकार्पण किया गया।

फरवरी माह में मिशन बागबान के अंतर्गत **श्रीमती गीता देवी बिड़ला, श्री तनसुख लाल बैद, श्रीमती सुशीला देवी बैद, श्री केदारनाथ खटोड़, श्री हरिकृष्ण दहलाल, डॉ. प्रेम शंकर केजरीवाल, श्रीमती सीता देवी केजरीवाल, श्री शिवशंकर प्रसाद खेतान, श्रीमती सावित्री देवी खेतान, डॉ. शंकर प्रसाद अग्रवाल, श्रीमती विद्या देवी अग्रवाल, श्रीमती गीता देवी केजरीवाल** एवं अन्य को सम्मानित किया गया।

मिशन बागबान के अंतर्गत गोगरी जमालपुर में ९६ वर्षीय धार्मिक और सामाजिक महिला श्रीमती सीता देवी केजरीवाल का सम्मान

प्रतिभा पर्व २०२२ के अंतर्गत सीए की परीक्षा में सफल सुश्री पल्लवी अग्रवाल टेकरीवाल को सरस्वती सम्मान

बधाई!

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, सुख्यात उद्योगपति-समाजसेवी ई. अशोक कुमार जालान वर्ष २०२२-२४ के लिए संबलपुर चेम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर श्री जालान को हार्दिक बधाइयाँ देते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार उनके सुदीर्घ स्वस्थ, प्रसन्न, सम्पन्न जीवन एवं उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामना करता है!

बधाई!

काठमाण्डु से वरिष्ठ समाजबंधु श्री मदन धनावत ने सूचना दी है कि नेपाल के प्रदेश १ के सांसद श्री ओमप्रकाश सरावगी को प्रदेश १ सरकार में भूमि व्यवस्था एवं सहकारी मंत्री मनोनीत किया गया है। ध्यातव्य है कि नेपाल में प्रांत को नाम की जगह संख्या के आधार पर जाना जाता है। लब्धप्रतिष्ठ उद्योगपति--समाजसेवी श्री सरावगी ने लम्बे समय तक नेपाल-भारत मैत्री संघ के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया है।

श्री ओमप्रकाश जी को हार्दिक बधाइयाँ देते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार नेपाल के प्रदेश १ सरकार का भी आभार ज्ञापित करता है!

पर्यावरण–संरक्षण आज पूरे विश्व के समक्ष एक बड़ी चुनौती : रोहन अग्रवाल

गत २३ फरवरी २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से संबद्ध पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मेलन के शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित केन्द्रीय सभागार में एक अभिनंदन समारोह आयोजित कर **'प्रदूषण एवं प्लास्टिक मुक्त वातावरण'** के लिए आम लोगों को जागरूक करने हेतु राष्ट्र एवं विश्वभ्रमण कर रहे नागपुर के **श्री रोहन अग्रवाल** का भव्य अभिनंदन किया गया। २५ अगस्त २०२० को वाराणसी में गंगास्नान के बाद यात्रा की शुरूआत कर बीस वर्षीय रोहन १७ राज्यों से होते हुए कोलकाता पहुँचे और उनका दक्षिण एशियाई देशों से होते हुए रूस के साइबेरिया में ओरूयाकोम नामक स्थान पर जाने का कार्यक्रम है। ओरूयाकोम दुनिया के सबसे ठंडे स्थानों में से एक है और रोहन वहाँ पहुँचने वाले पहले भारतीय होंगे।

समारोह में पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नंद किशोर अग्रवाल** ने सबका स्वागत–अभिनंदन करते हुए रोहन की महायात्रा की सफलता की मंगलकामना की। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** ने कहा कि रोहन शिक्षा ग्रहण करने की उम्र में पूरे समाज को एक जरूरी सीख दे रहे हैं। राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने कहा कि इस उम्र में रोहन का भविष्य संवारने का जज्बा एक बहुत बड़ी बात है। यह जज्बा युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत की भूमिका निभाएगा। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री भानीराम सुरेका** ने दुपट्टा एवं स्नेहचिह्न देकर रोहन का अभिनंदन किया। राँची से सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने रोहन को शुभकामना–संदेश भेजा।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने कहा कि मारवाड़ी उद्योग–व्यापार के लिए जाने जाते है और रोहन ने लीक से हट कर एक ज्वलंत विषय को रेखांकित किया है। समारोह के विशिष्ट अतिथि **श्री रामप्रसाद सराफ** ने रोहन को साधुवाद देते हुए कहा कि विश्व के किसी भी कोने में किसी भी प्रकार की आवश्यकता होने पर समाज उनके साथ खड़ा मिलेगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय एवं पश्चिम बंग के पदाधिकारियों ने मारवाड़ी परम्पराओं के अनुसार पगड़ी, दुपट्टा एवं अभिनंदन–पत्र देकर रोहन का सम्मान किया। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री नन्द लाल रूँगटा के सौजन्य से उपहारस्वरूप आईफोन तथा पश्चिम बंग सम्मेलन की ओर से ५० हजार रुपयों की राशि का चेक प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। अपने वक्तव्य में रोहन ने सबका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ईश्वर की अनुकम्पा एवं अपने अग्रजों के आशीर्वाद से यहाँ तक पहुँचा हूँ और आगे की यात्रा भी आप सबके शुभकामनाओं के बल पूर्ण करने का प्रयास करूँगा। उन्होंने कहा कि उनका **उद्देश्य प्लास्टिक का विरोध नहीं अपितु इसके सही इस्तेमाल को बढ़ावा देना है।** रोहन ने विस्तारपूर्वक प्लास्टिक के दुष्प्रभाव तथा इसका उपयोग कम करने के रास्तों के विषय में बताया और सभी उपस्थितों से यथासम्भव अपने परिवारजनों, मित्रों, परिचितों को इस विषय पर सजग–सचेत करने का अनुरोध किया।

समाजसेवी **श्री प्रवीण खेतावत** ने रोहन अग्रवाल एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री दामोदर बिदावतका** ने विशिष्ट अतिथि श्री रामप्रसाद सराफ का परिचय दिया। सम्मेलन की स्वास्थ्य उपसमिति के चेयरमैन **श्री पवन जालान** ने समारोह का कुशल संचालन किया। युवा समाजसेवी **श्री नितिन अग्रवाल** ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। समारोह में सम्मेलन के पूर्व कोषाध्यक्षगण श्री आत्माराम सोन्थलिया एवं श्री कैलाशपति तोदी, सर्वश्री राधाकिशन सफ्फड़, अंकित झुनझुनवाला, दीपक खेतावत, दिनेश सिंघानिया, प्रमोद गोयनका, राजेन्द्र मोर, विवेक अग्रवाल, पारसनाथ अग्रवाल, एम.एस. सराफ, चन्द्र बेहानी, रामबिलास मिरानिया, गोपी धुवालिया, सोहन अग्रवाल, शरद सराफ, सीताराम शर्मा, केदारनाथ गुप्ता, श्रीमती मंजू खेमका, श्रीमती प्रज्ञा झुनझुनवाला, सहित काफी संख्या में समाज के लोग उपस्थित थे।

उच्च शिक्षा : आज की आवश्यकता

– नन्दलाल रूँगटा

एक समय था जब मारवाड़ी समाज के लिये यह कहावत चरितार्त थी कि "**पढ़कर के करैगो – घर को कारोवार कुण देखसी**" परन्तु आज स्थिति बिलकुल ही विपरीत है, जिस समाज की महिलाये एक समय पर्दे के भीतर जीवन-यापन किया करती थीं, वे ही आज न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में, उच्चशिक्षा के क्षेत्र में भी अपना शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने में युवाओं से किसी भी प्रकार से पीछे नहीं हैं। हम यह तो नहीं कह सकते कि अन्य समाजों की तरह मारवाड़ी समाज ने उन्नति का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है लेकिन इतना अवश्य है कि हमने लक्ष्य को ओर कदम बढ़ाते हुए शिक्षा क्षेत्र में संतोषप्रद उन्नति प्राप्त की है।

प्रतिद्वन्दिता के इस युग में भी समाज ने अपनी पहचान "**कठिन मेहनत और ईमानदारी**" का त्याग नहीं किया है। आज समाज के युवक एवं युवतियाँ अपने परम्परागत व्यवसाय के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में काफी तेजी से आगे बढ़ते जा रहे है। एक समय था जब समाज के बच्चों के १०वीं कक्षा पास हो जाने से उसे पढ़ा-लिखा मान लिया जाता था। लड़कियों की स्थिति में इससे भी बदतर थी। उनके पढ़ने का अर्थ समाज में बच्ची को बिगाड़ना तक माना जाता था। कहने का तात्पर्य यह है कि एक समय था जब मारवाड़ी समाज शिक्षा के क्षेत्र को अपनाने में काफी संकोच करता था। धीरे–धीरे समाज की इस सोच मे काफी बदलाव देखने को मिला। १९वीं शताब्दी के अन्तिम दौर में समाज के कुछ जागरूक युवाओं ने धीरे–धीरे शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। इसके परिणाम काफी सुखद देखने को मिले, समाज के बच्चों को महाजनी, पहाड़ा, क,ख,ग, पढ़ाने लगे। इस परम्परागत तरीके से पढ़ाने वाले शिक्षकों को हम गुरुजी कहा करते थे। धीरे–धीरे इन पाठशालाओं में कुछ समस्या देखने को मिली। जिनमें प्रमुखतः (१) लड़के ही इस पाठशाला में पढ़ने जाते थे (२) पाँचवी कथा के बाद इन पाठशालाओं में पढ़ाई नहीं हो पाती थी। इस समस्या का समाधान जगह–जगह "हिन्दी विद्यालय" को खोल कर किया गया। आज देश के प्रायः सभी अहिन्दी भाषी प्रान्तों के हिन्दी विद्यालय कि बात के सबूत हैं। जैसे–जैसे आजादी की तरफ देश ने कदम रखना शुरू किया, महात्मा गांधी जी के विदेशी वस्त्र जलाओ आन्दोलन या अन्य पिकेटिंग आन्दोलनों से, समाज की महिलाओं को भी इन आन्दोलनों के कुछ रचनात्मक कार्यों की तरफ लगातार देखा गया। कलकत्ते की सड़कों पर समाज की महिलायें रात के अंधेरे में समाचार पत्र बाँटने का कार्य या हॉस्पीट लों में आन्दोलनकारियों को भोजन खिलाने जैसे कार्य करने लगी थी। वास्तव में देखा जाय तो यहीं से समाज में शिक्षा के विषय में भी नई सोच उत्पन्न हुई। इस क्रांतिकारी कदम ने समाज के उत्साही युवकों को काफी आधार प्रदान किया और शुरू हो गई महिलाओं के लिये विद्यालय खोलने की बात। कोलकाता का सबसे पहला महिला विद्यालय जो आज भी बड़ाबाजार में स्थित है – "मारवाड़ी बालिका विद्यालय", एक समय आजादी के आन्दोलनकारियों का केन्द्र बिन्दु भी बन गया था। आगे चलकर देश के कई हिस्सों में समाज के लड़के–लड़कियों के लिये विद्यालय खुलते चले गये। इस काल में प्रवासी राजस्थानी–हरियाणवी समाज (जिसे देश के सभी हिस्सों में मारवाड़ी समाज के रूप में जाना जाता है) में शिक्षा के प्रति लगाव देखा गया। इसे मारवाड़ी समाज के लिये "**शिक्षा का परिवर्तन काल**" भी कहा जा सकता है।

२०वीं शताब्दी के शुरूआती काल में शिक्षा के क्षेत्र में देश ने काफी प्रगति की। इस समय तक देश में उच्च शिक्षा का बोलबाला हो चुका था। उच्चशिक्षा ग्रहण करने के लिये देश के विभिन्न हिस्सों से सक्षम परिवारों के बच्चे विदेशों में, विशेषकर इंग्लैण्ड, जाकर पढ़ने लगे थे। जिसकी अन्य समाज तो मान्यता देता था, परन्तु मारवाड़ी समाज के शुद्ध शाकाहारी होने के चलते उच्च शिक्षा को मान्यता देने की बात तो दूर, विदेश यात्रा करने की बात पर भी हंगामा खड़ा हो जाता था तथा समाज से बहिष्कृति का सामना करना पड़ता था। एक समय जो समाज अपने बच्चों के विदेश जाने पर अंकुश लगाता रहा था, आज हमारे समाज के युवक–युवतियाँ उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिये बड़ी संख्या में विदेश जा रहे है। २१वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना करने की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहे है।

आर्थिक वैश्वीकरण एवं प्रतिस्पर्द्धा के वर्तमान युग में समाज को नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विश्व एक छोटे से गाँव का रूप ले रहा है। ज्ञान एवं विज्ञान का महत्व आज प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोपरि है। मारवाड़ी समाज को उच्चतम तकनीकी शिक्षा को प्राप्त कर अपनी सर्वश्रेष्ठता को कायम रखना है। समाज ने व्यापार-उद्योग के अलावा शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, कला, खेल, ज्ञान-विज्ञान सभी क्षेत्र में नयी उपलब्धियाँ हासिल कर समाज की नयी तस्वीर को उजागर किया है।

उच्च शिक्षा, देशी अथवा विदेशी, महँगी होती जा रही है। मारवाड़ी सम्मेलन ने इस क्षेत्र में पहल की है जिससे कोई भी मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्रा अर्थाभाव में उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रह सके। समाज के साधन-सम्पन्न महानुभावों से मेरी विशेष प्रार्थना है कि वे इस पक्ष में पूर्ण समर्थन एवं सहयोग प्रदान करें। विभिन्न प्रान्तीय सम्मेलनों द्वारा वर्षों से शिक्षा कोष का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। अब समय आ गया है जब ये कोष उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को प्राथमिकता प्रदान कर समाज को अग्रगति प्रदान करेगा।

(समाज विकास, जुलाई २००९ अंक में तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा का अध्यक्षीय आलेख)

To your taste buds,
with love...
Refreshingly, yours.
Indulgently, yours.
Addictively, yours.
Spicily, yours.
Healthily, yours.
Nourishingly, yours.
Delightfully, yours.
Obsessively, yours.
Temptingly, yours.
Passionately, yours.
Snackingly, yours.
Yours Tastefully
Anmol
TM
celebrating
25
years
BISCUITS
www.anmolindustries.com | Follow us on:

PHONEX ROADWINGS
STEVEDOR & SHORE HANDLING AGENT
Our Services
Port Stevedoring & Cargo Handling of Both Bulk Break bulk cargo
Shipping / Steamer Handling Agent
Road Transportation
In bound & Out bound Logistics
Container Freight Services
A-1/46/1, New Paharpur Road,
Rabindranagar, Kolkata – 700 066
E-mail : phonex.roadwings@gmail.com
roadwingsinternational@gmail.com
PIC - Nikunj Gourisaria , Mob. 9833933729, E-mail : nikunj.gourisaria@gmail.com

उच्च रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) के लिए कुदरती आहार

उच्च रक्तचाप के रोगी को ज्यादा मात्रा में भोजन नहीं करना चाहिए, साथ ही गरिष्ठ भोजन से भी परहेज करना चाहिए।

भोजन में फलों और सब्जियों का सेवन ज्यादा करना चाहिए।

लहसुन, प्याज, साबूत अन्न, सोयाबीन का सेवन करना चाहिए।

भोजन में पोटेशियम की मात्रा ज्यादा और सोडियम की मात्रा कम होनी चाहिए।

समुद्री नमक का सेवन एकदम बन्द कीजिए और सेंधा नमक को अपनाइये।

डेयरी उत्पादों, चीनी, रिफाइन्ड खाद्य पदार्थों, तलीभुनी चीजों, केफीन और जंक फूड से नाता नहीं रखना चाहिए।

दिन में कम से कम १०-१२ गिलास पानी अवश्य पीना चाहिए।

कम मात्रा में बाजरा, गेहूँ का आटा, ज्वार, मूंग साबुत तथा अंकुरित दालों का सेवन करना चाहिए।

पालक, गोभी, बथुआ जैसी हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

सब्जियों में लौकी, नींबू, तोरई, पुदीना, परवल, सहिजना, कद्दू, टिण्डा, करेला आदि का सेवन करना चाहिए।

अजवायन, मुनक्का व अदरक का सेवन रोगी को फायदा पहुँचाता है।

फलों में मौसमी, अंगूर, अनार, पपीता, सेब, संतरा, अमरूद, अन्नानास आदि सेवन कर सकते हैं।

बादाम, बिना मलाई का दूध, छाछ, सोयाबीन का तेल, गाय का घी, गुड़, चीनी, शहद, मुरब्बा आदि का सेवन कर सकते हैं।

हीमोग्लोबिन बढ़ाने में सहयोगी

अमरूद : अमरूद जितना ज्यादा पका हुआ होगा, उतना ही पौष्टिक होगा। पके अमरूद को खाने से शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी नहीं होती।

आम : आम खाने से हमारे शरीर में रक्त अधिक मात्रा में बनता है, एनीमिया में यह लाभकारी होता है।

सेब : सेब एनीमिया जैसी बीमारी में लाभकारी होता है। सेब खाने से शरीर में हीमोग्लोबिन बनता है।

अंगूर : अंगूर में भरपूर मात्रा में आयरन पाया जाता है जो शरीर में हीमोग्लोबिन बनाता है, और हीमोग्लोबिन की कमी संबंधी बीमारियों को ठीक करने में सहायक होता है।

चुकन्दर : चुकन्दर से प्राप्त उच्च गुणवत्ता का लौह तत्व रक्त में हीमोग्लोबिन का निर्माण व लाल रक्तकणों की सक्रियता के लिए बेहद प्रभावशाली है। खून की कमी यानी एनीमिया की शिकार महिलाओं के लिए चुकंदर रामबाण के समान है। चुकन्दर के अलावा चुकन्दर की हरी पत्तियों का सेवन भी बेहद लाभदायी है। इन पत्तियों में तीन गुना लौह तत्व अधिक होता है।

तुलसी : तुलसी रक्त की कमी को कम करने के लिए रामबाण है। तुलसी के नियमित सेवन से शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ती है।

सब्जियाँ : शरीर में हीमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए ज्यादा से ज्यादा हरी सब्जियों को अपने भोजन में शामिल करना चाहिए। हरी सब्जियों में हीमोग्लोबिन बढ़ाने वाले तत्व ज्यादा मात्रा में पाये जाते है।

तिल : तिल हमारे शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है। तिल खाने से रक्ताल्पता की बीमारी ठीक होती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः!!

श्रद्धांजलि

उत्तर प्रदेश सम्मेलन के महामंत्री ललित मोहन अग्रवाल नहीं रहे

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की उत्तर प्रदेश की प्रांतीय शाखा उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री ललित मोहन अग्रवाल का गत १३ फरवरी २०२२ को आकस्मिक वैकुण्ठवास हो गया। वाराणसी, उत्तर प्रदेश के निवासी स्व. ललित मोहन जी लम्बे समय से सम्मेलन से जुड़े थे और एक समर्पित समाजसेवी थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार स्व. ललित मोहन जी को विनम्र-कृतज्ञ पुष्पांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीविग्रह में स्थान और उनके परिजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति दें!

इच्छापूर्ति का वृक्ष

एक घने जंगल में एक इच्छापूर्ति वृक्ष था, उसके नीचे बैठ कर कोई भी इच्छा करने से वह तुरंत पूरी हो जाती थी। यह बात बहुत कम लोग जानते थे क्योंकि उस घने जंगल में जाने की कोई हिम्मत ही नहीं करता था।

एक बार संयोग से एक थका हुआ व्यापारी उस वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए बैठ गया। उसे पता ही नहीं चला कि कब उसकी नींद लग गई। जागते ही उसे बहुत भूख लगी। उसने आसपास देखकर सोचा कि काश कुछ खाने को मिल जाए। तत्काल स्वादिष्ट पकवानों से भरी थाली हवा में तैरती हुई उसके सामने आ गई।

व्यापारी ने भरपेट खाना खाया और भूख शांत होने के बाद सोचने लगा कि काश कुछ पीने को मिल जाए। तत्काल उसके सामने हवा में तैरते हुए अनेक शरबत आ गए।

शरबत पीने के बाद वह आराम से बैठ कर सोचने लगा – "कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ। हवा में से खाना–पानी प्रकट होते पहले कभी नहीं देखा, न ही सुना। जरूर इस पेड़ पर कोई भूत रहता है जो मुझे खिला–पिला कर बाद में मुझे खा लेगा।" ऐसा सोचते ही तत्काल उसके सामने एक भूत आया और उसे खा गया।

इस प्रसंग से आप यह सीख सकते है कि हमारा मस्तिष्क ही इच्छापूर्ति वृक्ष है आप जिस चीज की प्रबल कामना करेंगे वह आपको अवश्य मिलेगी।

अधिकांश लोगों को जीवन में बुरी चीजें इसलिए मिलती है क्योंकि वे बुरी चीजों की ही कामना करते है। इंसान ज्यादातर समय सोचता है – कहीं बारिश में भीगने से मै बीमार न हो जाऊँ, और वह बीमार हो जाता है। इंसान सोचता है कि कहीं मुझे व्यापार में घाटा न हो जाए, और घाटा हो जाता है। इंसान सोचता है – मेरी किस्मत ही खराब है, और उसकी किस्मत सचमुच खराब हो जाती है।

इस तरह आप देखेंगे कि आपका अवचेतन मन इच्छापूर्ति वृक्ष की तरह आपकी इच्छाओं को ईमानदारी से पूर्ण करता है। **इसलिए आपको अपने मस्तिष्क में बहुत सावधानी से ही विचारों को प्रवेश करने की अनुमति देनी चाहिए।**

राजा और बाज

बहुत समय पहले की बात है। एक राजा को उपहार में किसी ने बाज के दो बच्चे भेंट किये। वे बड़ी ही अच्छी नस्ल के थे और राजा ने कभी इससे पहले इतने शानदार बाज नहीं देखे थे। राजा ने उनकी देखभाल के लिए एक अनुभवी आदमी को नियुक्त कर दिया।

अब कुछ महीने बीत गए तो राजा ने बाजों को देखने का मन बनाया और उस जगह पहुँच गए जहाँ उन्हें पाला जा रहा था। राजा ने देखा कि दोनों बाज काफी बड़े हो चुके थे और अब पहले से भी शानदार लग रहे हैं। राजा ने बाजों की देखभाल कर रहे आदमी से कहा, "मैं इनकी उड़ान देखना चाहता हूँ, तुम इन्हें उड़ने का इशारा करो।"

आदमी ने ऐसा ही किया। इशारा मिलते ही दोनों बाज उड़ान भरने लगे, पर जहाँ एक बाज आसमान की ऊँचाइयों को छू रहा था, वहीं दूसरा कुछ ऊपर जाकर वापस उसी डाल पर आकर बैठ गया जिससे वो उड़ा था।

यह देख राजा को कुछ अजीब लगा। उसने पूछा – क्या बात है कि जहाँ एक बाज इतनी अच्छी उड़ान भर रहा है, वहीं दूसरा उड़ना ही नहीं चाह रहा? पालक ने जवाब दिया – जी हुजूर, इस बाज के साथ शुरू से ही यह समस्या है, वो इस डाल को छोड़ता ही नहीं।

राजा को दोनों ही बाज प्रिय थे और वे दूसरे बाज को भी उसी तरह उड़ना देखना चाहते थे। अगले दिन पूरे राज्य में ऐलान करा दिया गया कि जो व्यक्ति इस बाज को ऊँचा उड़ाने में कामयाब होगा, उसे ढेरों इनाम दिया जाएगा।

फिर क्या था, एक से एक विद्वान और पक्षियों के विशेषज्ञ आए और बाज को उड़ाने का प्रयास करने लगे। पर हफ्तों बीत जाने के बाद भी बाज का वही हाल था – वो थोड़ा सा उड़ता और वापस डाल पर आकर बैठ जाता।

फिर एक दिन कुछ अनोखा हुआ, राजा ने देखा कि उसके दोनों बाज आसमान में उड़ रहे हैं। उन्हें अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ और उन्होंने तुरंत उस व्यक्ति का पता लगाने को कहा जिसने ये कारनामा कर दिखाया था। वह व्यक्ति एक किसान था और अगले दिन उसे दरबार में हाजिर किया गया।

इनाम में स्वर्ण मुद्राएँ भेंट करने के बाद राजा ने कहा, "मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। बस तुम इतना बताओ कि जो काम बड़े-बड़े विद्वान नहीं कर पाये वो तुमने कैसे कर दिखाया"।

"मालिक, मैं तो एक साधारण सा किसान हूँ, मैं ज्ञान की ज्यादा बातें नहीं जानता। मैंने तो बस वो डाल काट दी जिस पर बैठने का बाज आदी हो चुका था, और जब वो डाल ही नहीं रही तो वो भी अपने साथी के साथ ऊपर उड़ने लगा।"

दोस्तों, हम सभी ऊँचा उड़ने के लिए ही बने हैं। लेकिन कई बार हम जो कर रहे होते है उसके इतने आदी हो जाते हैं कि अपनी ऊँची उड़न भरने की, कुछ बड़ा करने की, काबिलियत को भूल जाते है। यदि आप भी सालों से किसी ऐसे ही काम में लगे हैं जो आपके सम्भावनाओं के मुताबिक नहीं है तो एक बार ज़रूर सोचिये कि कहीं आपको भी उस डाल को काटने की ज़रूरत तो नहीं जिस पर आप बैठे हुए हैं!!

मुक्त हो जायें

एक बार एक कौआ माँस के एक टुकड़े को पकड़े हुए शांत जगह की तलाश में उड़ रहा था। तभी पास में उड़ रहे बाजों के झुंड ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया। कौआ डर कर घबरा गया। वह ऊँची, और ऊँची, उड़ान भरने लगा, फिर भी बेचारा कौआ उन ताकतवर बाजों से पीछा नहीं छुड़ा पाया।

तभी वहाँ से गुजर रहे एक गरुड़ ने कौए की दुर्दशा और पीड़ा देखी। कौए के करीब आकर उसने पूछा, "क्या हुआ, मित्र? तुम बहुत परेशान और अत्यधिक तनाव में लग रहे हो?" कौआ रोते हुए बोला, "इन बाजों को देखो! वे मुझे मारने के लिए मेरे पीछे पड़े हैं।" ज्ञान का पक्षी होने के नाते गरुड़ बोला, "मेरे दोस्त! वे तुम्हें

(शेष पृष्ठ २० पर)

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन्प्रयास
उत्तारणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः।
मूढेषु वे महदनुग्रह आर्तबन्धो
किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः।।

हे भगवान, हे समग्र जगत के आदि आध्यात्मिक गुरु, आप ही ब्रह्मांड के सृजन, पालन तथा संहार का कारण स्वरूप हैं, अतएव आपकी सेवा में लगे हुए पतितात्माओं का उद्धार करने में आपको कौन सी कठिनाई है? आप सारे दुखयारे जीवों के मित्र हैं और महापुरुषों के लिए मूर्ख व्यक्तियों पर दया दिखलाना आवश्यक है। अतएव आप हम जैसे मनुष्यों पर अहैतुकी कृपा प्रदर्शित करेंगे जो आपकी सेवा में लगे हुए हैं।

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः
कर्म स्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम्।
संसेवया त्वयि विनेति षडङ्गया किं
भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत।।

अतएव हे श्रेष्ठतम पूज्य भगवान्, मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ, क्योंकि षड्अंग भक्ति अर्थात् प्रार्थना करना, समस्त कर्म फलों को आपको समर्पित करना, पूजा करना, आपके निमित्त कर्म करना, आपके चरणकमलों को सर्वदा स्मरण करना तथा आपके यश का श्रवण करना ऐसी भक्ति किये बिना परमहंस पद को प्राप्त होने वाला लाभ भला कौन प्राप्त कर सकता है?

ॐ नमो भगवते तुभ्यं पुरुषाय महात्मने।
हरयेऽद्‌भुतसिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने।।

हे छः ऐश्वर्यो से पूर्ण भगवान्, हे परम पुरुष, हे परमात्मा, हे समस्त दुखों को हरने वाले, हे अद्‌भुत नृसिंह रूप में परम पुरुष, मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ।

श्रीनारद उवाच

नत्वा भगवतेऽजाय लोकानां धर्मसेतवे।
वक्ष्ये सनातनं धर्मं नारायणमुखाच्छ्रयतम्।।

मैं सर्वप्रथम समस्त जीवों के धार्मिक सिद्धान्तों के संरक्षक भगवान् कृष्ण को नमस्कार करके नित्य धार्मिक पद्धति के सिद्धान्तों को बताता हूँ जिन्हें मैंने नारायण के मुख से सुना है।

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्ज नशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

मैं अपने गुरु को सादर नमस्कार करता हूँ जिन्होंने ज्ञान की दीप से मेरी उन आँखों को खोल दिया है, जो अज्ञान के अन्धकार से अन्धी हो गई थीं।

श्रीगजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशयाभिधीमहि।।

मैं परम पुरुष वासुदेव को सादर नमस्कार करता हूँ। उन्हीं के कारण यह शरीर आत्मा की उपस्थिति के परिणाम स्वरूप कर्म करता है; अतएव वे प्रत्येक जीव के मूल कारण हैं। वे ब्रह्मा तथा शिव जैसे महापुरुषों के लिए पूजनीय है और वे प्रत्येक जीव के हृदय में विराजित हैं। मैं उनका ध्यान करता हूँ।

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं
क्वचिद्विभातं कव च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक्साक्ष्युभयं तदीक्षते
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः।।

भगवान् अपनी शक्ति के विस्तार द्वारा कभी तो दृश्य जगत को व्यक्त बनाते और कभी उसे अव्यक्त बना देते हैं। वे सभी प्रकार की परिस्थितियों में परम कारण ऐसे परम कार्य, प्रेक्षक तथा साक्षी दोनों हैं। इस प्रकार वे सभी वस्तुओं से परे हैं। तथा भगवान् मेरी रक्षा करें।

कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु
तमस्तढासीद्‌गहनं गभीरं
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः।।

कालान्तर में जब सारे लोगों तथा उनके निर्देशकों एवं पालनकर्ताओं समेत इस दृश्य जगत के सारे कार्य–कारणों का संहार हो जाता है, तो घोर अन्धकार की स्थिति आती है। किन्तु इस अन्धकार के ऊपर भगवान् रहता है। मैं उनके चरणकमलों की शरण ग्रहण करता हूँ।

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु–
र्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टती
दुरत्थयानुक्रमणः स मावतु।।

आकर्षित करने वाली वेशभूषा से ढके रहने तथा विभिन्न प्रकार की गतियों से नाचने के कारण रंगमंच के कलाकार को श्रोता समझ नहीं पाते। इसी प्रकार परम कलाकार के कार्यों तथा स्वरूपों को बड़े-बड़े मुनि या देवतागण भी समझ नहीं पाते और पशुओं के समान बुद्धिहीन जीव तो इसे समझने में पूर्ण रूप से असमर्थ है। न तो देवता तथा न तो मुनि, न ही बुद्धिहीन मनुष्य भगवान के स्वरूप को समझ सकते हैं और न ही वे उनकी वास्तविक स्थिति को अभिव्यक्त कर सकते हैं। वही भगवान् मेरी रक्षा करें।

दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं
विसुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः।।

जो समस्त जीवों के प्रति समान भाव रखते हैं, जो सबों के मित्र हैं तथा जो वन में ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास व्रत का अभ्यास बिना त्रुटि के करते हैं, ऐसे विमुक्त तथा मुनिगण भगवान् के सर्व कल्याणप्रद चरणकमलों का दर्शन पाने के इच्छुक रहते हैं। वही भगवान् मेरा गन्तव्य हों।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

विशिष्ट संरक्षक सदस्य

डॉ. दीपक गुप्ता
हाउस नं. ५, रोड १९,
ईस्ट पंजाबी बाग,
नई दिल्ली – ११० ०२६
मो : ९८१०१५८५७८

सम्मेलन के सदस्य बनें और बनाएँ!

आजीवन सदस्य

श्री अरुण कुमार अग्रवाल नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री बजरंगलाल चण्डक** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री चाँद रतन खत्री** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री देवराज लोहिया** नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री गजेन्द्र कुमार अग्रवाल** ढालपुर, लक्खीमपुर, असम
श्री हरिश चण्डक नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री जय किशन जालान** बिहपुरिया वार्ड नं.-२, लक्खीमपुर, असम	**श्री जयदीप चण्डक** नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री जेठमल काबरा** ढालपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री मनोज कुमार जैन** ढालपुर, लक्खीमपुर, असम
श्री पंकज लढ़ढ़ा बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री प्रदीप चण्डक** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री प्रकाश कुमार मुनौट** नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री प्रकाश लोहिया** नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री प्रकाश डागा** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम
श्री रविन्द्र कुमार राठी नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री राजेन्द्र प्रसाद लोहिया** नारायणपुर, लक्खीमपुर, असम	**श्री राजेश बहेती** बिहपुरिया वार्ड नं.-२, लक्खीमपुर, असम	**श्री सम्पत चण्डक** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री संदीप अग्रवाल** ढालपुर, लक्खीमपुर, असम
श्री सत्य नारायण राठी बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री सुधीर शर्मा** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री सुधीर कुमार चण्डक** बिहपुरिया, लक्खीमपुर, असम	**श्री सुशील कुमार लाहोटी** बिहपुरिया वार्ड नं.-२, लक्खीमपुर, असम	**श्री विनीत हरलालका** बिहपुरिया वार्ड नं.-२ लक्खीमपुर, असम
श्रीमती सुमित्रा देवी अग्रवाल मे. अविनाश स्टोर, गोला रोड, गोला चौक, हजारीबाग, छारखंड	**श्रीमती सरिता खण्डेलवाल** रामनगर, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती हीरामणी जैन** मालवीय नगर, झंडा चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती कविता अग्रवाल** पंचमंदिर चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्री अमित कुमार सारस्वत** गांधी चौक, अपर बाजार, राँची, झारखंड
श्री सुनील साँवड़िया धैया रहोड, रामनगर, धनबाद, झारखंड	**श्री नारायण कुमार अग्रवाल** कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, राँची, झारखंड	**श्री राजेश अगरवाला** बरगंडा, गिरीडीह, झारखंड	**श्री संतोष कुमार अग्रवाल** गुरुद्वारा के बगल में, रामगढ़, कैंट, झारखंड	**श्री उमेश पंचारिया** ओल्ड मोन्धा, जालना, महाराष्ट्र
श्री कृष्णा सिंह राजपुरोहित लक्ष्मी आरकेड, विशाखापट्टनम	**श्री मनोज कुमार असवाल** पेड्डापाढू रोड, श्रीकाकुलम	**श्री नन्दलाल खेमका** एस.बी.आई मेन रोड, विशाखापट्टनम	**श्री निखिल कुमार अग्रवाल** महावीर कॉम्प्लेक्स, विशाखापट्टनम	**श्री पोदेश्वर पुरोहित** जगदम्बा सेंटर, विशाखापट्टनम
श्री राजेन्द्र कुमार करनानी एल.बी.एस. कॉलोनी, श्रीकाकुलम	**श्री राजेश भरतिया** गाजूवाला, विशाखापट्टनम	**श्री राजेश कुमार भंसाली** रामनगर, विशाखापट्टनम	**श्री राजकुमार धानुका** चिपुरुपल्ली, विजयनगरम	**श्री राजकुमार शर्मा** अल्लीपुरम मेन रोड, विशाखापट्टनम
श्री राकेश कुमार अग्रवाल चिन्ना बरतम स्ट्रीट, श्रीकाकुलम	**श्री रामलाल शर्मा** अल्लीपुरम, विशाखापट्टनम	**श्री संदीप कुमार पोद्दार** अमाडालाबलासा, श्रीकाकुलम	**श्री संजय कुमार धानुका** चिपुरुपल्ली, विजयनगरम	**श्री शंकर लाल शर्मा** ज्योति थियेटर रोड, विशाखापट्टनम
श्री विजय राज माली गाजूवाका, विशाखापट्टनम	**श्री विनीत कुमार गोलछा** मधुनगर, विशाखापट्टनम	**श्री मोहन लाल पंसारी** खेतराजपुर, पंका पाड़ा, ओडिशा	**श्री मदनलाल मालपानी** मलकापुर, बुलधाना, महाराष्ट्र	**श्री नरेश अग्रवाल** जयार पथ, अकोला, महाराष्ट्र

प्रेरक प्रसंग (पृष्ठ १८ का शेषांश)

मारने के लिए तुम्हारे पीछे नहीं हैं। वास्तव में, वे माँस के उस टुकड़े के पीछे हैं जिसे तुम अपनी चोंच में कसकर पकड़े हुए हो। बस इसे छोड़ दो और देखो क्या होता है।"

कौए ने गरुड़ की सलाह मानकर माँस का टुकड़ा गिरा दिया और चमत्कारी तरीके से बाजों का पूरा झुंड गिरते हुए माँस की ओर उड़ गया। गरुड़ मुस्कुराया और बोला, "दर्द केवल तब तक रहता है जब तक तुम इसे पकड़े रहते हो। बस इसे छोड़ दो और दर्द से मुक्ति।" कौआ नतमस्तक हो बोला, "आपकी बुद्धिमानी भरी सलाह के लिए धन्यवाद। मैंने माँस का यह टुकड़ा गिरा दिया और अब मैं बिना तनाव के और भी ऊँची उड़ान भर सकता हूँ।"

हम 'अहंकार' नाम का एक बहुत बड़ा बोझ ढोते हैं, जो अपने बारे में एक झूठी पहचान बनाता है, जैसे – मैं ऐसा हूँ और इसलिए मुझे प्यार किया जाना चाहिए, मुझे सम्मान मिलना चाहिए और तवज्जो मिलनी चाहिए, आदि। आइये मुक्त हो जाएँ इस मुर्खतापूर्ण अहंकार और स्वयं के प्रति मिथ्या धारणाओं से, फिर देखें कि क्या होता है।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य				
श्री संजय कुमार कसेरा नया बाजार रोड, जुगसलाई, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री संजय कुमार खण्डेलवाल** मेन रोड, हजारीबाग, झारखंड	**श्री संजय कुमार मोदी** टीन बाजार, दुमका, झारखंड	**श्री संजय कुमार वर्मा** श्याम बाजार रोड, मारवाड़ी चौक, दुमका, झारखंड	**श्री संजय कुमार अग्रवाल** बड़ा निमडीह, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड
श्री संतोष कुमार अग्रवाल भाटिया बस्ती, कदमा, पू. सिंहभूम, झारखंड	**श्री संतोष मोदी** बाल कृष्ण सहाय रोड, राँची, झारखंड	**श्रीमती सपना शर्मा** बिन्देश्वरी पथ, कुम्हारटोली, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती सरिता अग्रवाल** बड़ा निमडीह, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती सरिता अग्रवाल** महावीर स्थान चौक, हजारीबाग, झारखंड
श्रीमती सरला दोदराजका बड़ा निमडीह, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती सरोज देवी भालोटिया** १०, जुब्ली रोड, सी.एच. एरिया, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्रीमती सरोज देवी सोनी** मदाई काला, हजारीबाग, झारखंड	**श्री सतीश कुमार केडिया** पुलिश लाईन रोड, बारवाडीह, गिरिडीह, झारखंड	**श्री सौरव पटनी (जैन)** बाजार टंड, गोला रोड, हजारीबाग, रामगढ़, झारखंड
श्रीमती सीमा जैन बिनायका पैगोड़ा चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती सीमा कुमार अग्रवाल** महावीर स्थान चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती सीमा पोद्दार** आदित्यपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री शंकर लाल रुँगटा** नया बाजार, पू. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती शीतल दोदराजका** ढुंगरी, पं. सिंहभूम, झारखण्ड
श्रीमती सिखा अग्रवाल चोकड़ीवाल जादू बाबू चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्री शिरिष खेतान** वेस्ट लेक लेन, अपर बाजार, बाजार टंड, राँची, झारखंड	**श्री शीतल अग्रवाल** भालोबाला, जमशेदपुर, झारखण्ड	**श्री शिवा शंकर गड़िया** १सी, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री शिवम अग्रवाल** सोनारी, जमशेदपुर, झारखंड
श्रीमती श्री चौधरी ४१, ठाकुरबाड़ी रोड, साकची, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री श्याम पोद्दार** तलगड़िया मोड़, चास, बोकारो, झारखंड	**श्री श्याम सुन्दर खेमका** मेन रोड, चास, बोकारो झारखण्ड	**श्रीमती सिखा दोदरजका** टुँगरी, प. सिंहभूम, झारखण्ड	**श्रीमती सीमा अग्रवाल रामरायका** गुरु गोविन्द सिंह रोड, हजारीबाग, झारखंड
श्रीमती सीमा भालोटिया १०, जुबली रोड, सी.एच. एरिया, बिष्टुपुर, पू. सिंहभूम, जमशेदपुर, झारखंड	**श्रीमती स्नेहा मोदी** राम पथ, गोविन्द नगर, कदमा, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री सोहन अग्रवाल** गोला रोड, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती सोनल अग्रवाल** गोला चौक, हजाहीबाग, झारखंड	**श्रीमती सोनम गोयल** आदित्यपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड
श्रीमती सोनी मुरारका टुंगरी, प. सिंहभूम, झारखण्ड	**श्री सौरव अग्रवाल** राजेन्द्र कालोनी, माँगो, जमशेदपुर, झारखण्ड	**श्री सुभाष कुमार लोढ़ा** नया बाजार, चाकुलिया, पू. सिंहभूम, झारखण्ड	**श्रीमती सुधा अग्रवाल (गर्ग)** पंच मंदिर चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्री सुधीर अग्रवाल** रोड, एक्सटे न.-५, सोनारी, जमशेदपुर, झारखंड
श्रीमती सुमन रुँगटा अमला टोला, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती सुमेधा गोयल** आदित्यपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री सुनिल अग्रवाल (केजरीवाल)** मेन रोड, चास, बोकारो, झारखंड	**श्री सुनील कुमार लोहिया** साई मार्केट, दीनबंधु लेन, अपर बाजार, राँची, झारखंड	**श्री सुनिल नरेडी** कसीडीह, साकची, जमशेदपुर, झारखंड
श्रीमती सुनिता अग्रवाल रातू रोड, चाईबासा, पू. सिंहभूम, झारखंड	**श्री सन्नी जैन** बड़ा बाजार, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती सुरभी खण्डेलवाल** क्यु रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल** मोदक मार्केट, मेन रोड, चास, बोकारो, झारखंड	**श्री सुरेश कुमार मोदी** अजीम गली, दुमका, झारखंड
श्रीमती स्वीटी दोदराजका प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती स्वेता जालान** सदर बाजार, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती तारा अग्रवाल** टुंगरी, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती तृप्ती अग्रवाल** गोला चौक, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती उमा शाह** कशीडीह रोड नं.-१, साकची, जमशेदपुर, झारखंड
श्री तुषार जैन सेठी बाडम बाजार, गोला रोड, हजारीबाग, झारखंड	**श्रीमती उमा डांगा (अग्रवाल)** क्रास रोड नं.-४, डीमना रोड माँगो, जमशेदपुर, झारखंड	**श्रीमती उषा खण्डेलवाल** सुन्दरी मार्केट, हजारीबाग, झारखंड	**श्री उत्तम कुमार नरेडी** विरदी निवास, एम. रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्रीमती विनीता खिरवाल** निमजीह, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड
श्री विजय कुमार अग्रवाल रोड एक्सटे. नं.-५, सोनारी, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री विजय कुमार चौधरी** भागलपुर रोड, दुमका, झारखंड	**श्री विकाश कुमार अग्रवाल** बिहार हाट रोड, कल्याण नगर, भूवनडीह, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री विकाश कुमार अग्रवाल** मेन रोड, फुसरो, बोकारो, झारखंड	**श्री विकाश कुमार केडिया** बक्शीडीह रोड, गिरीडीह, झारखंड
श्री विनीत कुमार रुँगटा नया बाजार, पू. सिंहभूम, झारखंड	**श्रीमती विनिता श्राफ** सदर बाजार, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्री विवेक रुँगटा** के. रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड	**श्री विवेक सुल्तानियाँ** मेन रोड, चांडिल सरायकेला, झारखंड	**श्री यश वर्द्धन रुँगटा** के. रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड
श्री विकाश गोयल मेन रोड, बड़ा निमडीह, चाईबासा, प. सिंहभूम, झारखंड	**श्री गोविन्द गोस्वामी** कुम्हार पाड़ा, पांचाली, गुवाहाटी, असम	**श्री राज कुमार अगरवाला** आर्य चौक, सरावती, गुवाहाटी, असम	**श्री राजेश अग्रवाल (शशि)** काहिलीपाड़ा रोड, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री संदीप खोखरिया** ए. के. आजाद रोड, रेहाबड़ी, कामरूप, गुवाहाटी, असम
श्री अंशुल गोयल भांगागढ़, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**डॉ. आयुष सराफ** फोरेस्ट गेट, नरेंगी, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री ज्ञान चंद जैन** पी.बी. रोड, शागपुर, रेहाबड़ी, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती जुली जाजोदिया** बी.आर. फुकन रोड,कामरूप, कुम्हार पाड़ा, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती ललिता घिरिया** दिनेश ओझा पथ, कामरूप, भांगागढ़, गुवाहाटी, असम
श्रीमती नीलम जाजोदिया बी.आर. फुकन रोड, कामरूप, कुम्हारपाड़ा, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती नीतु बखरेदिया** दिनेश ओझा पथ, भांगागढ़, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती प्रियंका जालान** एम.एम. रोड, फैंसी बाजार, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती पूजा बिमीवाल** गोल बिल्डिंग, ए.टी. रोड, अठगाँव, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री रतन लाल वयाल** निपेन बोरा पथ, फाटाशिल अम्बरी, कामरूप, गुवाहाटी, असम
श्री रितेश अगरवाल रेहाबड़ी, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती श्रद्धा पोद्दार** ए.के.देव रोड, धिरेन पाड़ा, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती सरिता लोहिया** ११, दिनेश ओझा पथ, कामरूप, भांगागढ़, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती स्वीटी अग्रवाल** बाई लेन-२, श्रीनगर, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती विजया शर्मा** ४, जी.एन.बी. रोड, पान बाजार, कामरूप, गुवाहाटी, असम
श्री विकाश खण्डेलवाल स्पेनिस गार्डेन, जू रोड, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती विनिता चौधरी** एस.जे. रोड, अंठगांव, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती निशा जिंदल** फाटाशिल मेन रोड, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री अमित कुमार कंसल** नारिकोल बाड़ी, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री संजय मोदी** दिनेश ओझा पथ, भांगागढ़, कामरूप, गुवाहाटी, असम

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य				
श्री अनुप कुमार मोरे सिकरिया कम्पाउण्ड, क्रिस्चन बस्ती, जी.एस. रोड, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती सुनिता गुप्ता** बी,आर.पी. रोड, कुम्हारपाड़ा, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री पंकज बंसल** लक्ष्मी पथ, बेलतल्ला तिनाली, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री हेमन्त सुरेका** एस.जे. रोड, अंठगाँव, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री नितेश भरेच** स्पैनिस गार्डेन, जू रोड, कामरूप, गुवाहाटी, असम
श्री कमलेश गोयल टोकोबाड़ी, अठगांव, कामरूप, कालीमंदिर, गुवाहाटी, असम	**श्री कमलेश गोयल** टोकोबाड़ी, अठगाँव, कामरूप, कालीमंदिर, गुवाहाटी, असम	**श्रीमती निशा अग्रवाल** मजार रोड, भांगागढ़, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री प्रकाश अग्रवाल** मजार रोड, भांगागढ़, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री हरिश प्रकाश अग्रवाल** एन.एस. रोड, फाटासिल, कामरूप, गुवाहाटी, असम
श्रीमती कांता अग्रवाल माधबदेबपुर, रेहाबाड़ी, कामरूप, गुवाहाटी, असम	**श्री अनिल कुमार अग्रवाल** धिंग रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री बिनोद बोथरा** हनुमान मंदिर के अपोंजीट हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री धनपत कुमार नाहटा** टी.आर. फुकन रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री जुगल मोरे** लवखोवा रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम
श्री जुगराज बंथिया लवखोवा रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री ललित जैन** ए.टी. रोड, मारवाड़ी पट्टी, नगाँव, असम	**श्री मनोज कुमार खेतान** ओल्ड एट रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री नेमचंद अग्रवाल (डाबरीवाल)** लवखोवा रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्रीमती निर्मला आलमपुरिया** एस.एम.एस. रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम
श्री पवन अग्रवाल (बालाजी) हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री पियुष रुथिया** हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री प्रदीप लोहिया** धिंग रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री प्रेम कुमार नाहटा** टी.आर. फुकन रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री रजनीष जैन** हैबरगाँव, नामघर पथ, नगाँव, असम
श्री रामगोपाल जाजोदिया लवखोवा रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री रंजीत सिंह बोथरा** खुटीकटिया, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री संजय कुमार खेतावत** टी.आर. फुकन रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री सुरेश जैन** हैबरगाँव थाना के नजदीक हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री विद्या प्रकाश माहेश्वरी** धिंग रोड, हैबरगाँव, नगाँव, असम
श्री विजय कुमार कोठारी हैबरगाँव, नगाँव, असम	**श्री अमित अग्रवाला (हरलालका)** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री अरविन्द शर्मा** लक्खी भिजन, शिवसागर, नजीरा, असम	**श्री अशोक जालान (लिगरीपुखरी)** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री बजरंग तापड़िया** नजीरा, शिवसागर, असम
श्री भवानी राठी नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री बिजय कुमार अगरवाला** अठखेल, शिवसागर, नजीरा, असम	**श्री बिनोद जालान** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री दीपक लाहोटी** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल** गेलेकी, शिवसागर, असम
श्री घनश्याम शर्मा नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री गोपाल हरलालका** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री मुकेश अगरवाला (जालान)** गेलेकी, शिवसागर, असम	**श्री मुकेश गोयल** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री नंद किशोर करनानी** नजीरा, शिवसागर, असम
श्री नारायण अगरवाला नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री नारायण जालान** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री पप्पु अगरवाला** गेलेकी, शिवसागर, असम	**श्री पवन खोवाला** गेलेकी, शिवसागर, असम	**श्री प्रमोद कुमार अगरवाला (हरलालका)** नजीरा, शिवसागर, असम
श्री राजन अग्रवाल नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री राजेश अग्रवाल** गेलेकी, शिवसागर, असम	**श्री रमेश शर्मा** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री संजय लाहोटी** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री संजय शर्मा (पप्पु)** नजीरा, शिवसागर, असम
श्री संजीब खेतान (मन्टु) नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री साँवरमल अगरवाला** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री सुरेन्द्र लाहोटी** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री सुरेश अगरवाला** नजीरा, शिवसागर, असम	**श्री सुरेश शर्मा** नजीरा, शिवसागर, असम
श्री तारा चन्द अगरवाल गेलेकी, शिवसागर, असम	**श्री श्याम बिहारी अगरवाल** चरली, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री मोती शर्मा** मिशन रोड तिनाली मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री अनिल कुमार सांगानेरिया** थाना रोड, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री शिव कुमार अग्रवाल (अधि.)** थाना रोड, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम
श्री पंकज अग्रवाल चरली, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री राजेश अग्रवाल** मिशन रोड तिनाली, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री अखिल साबू** सेगुनबाड़ी, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री राकेश जिंदल** मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री अनुज कुमार अग्रवाल** लोवर मार्केट, मार्घेरिटा बाजार, तिनसुकिया, असम
श्री शशि कुमार अग्रवाल मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री पवन अग्रवाल (डी.पी.)** सेगुनबाड़ी, मार्घेरिटा, तिनसुकिया, असम	**श्री प्रमोद कसेरा** ए.टी. रोड, पानीटोला, असम	**श्री अभिषेक माहेश्वरी** बोंगाई गाँव, असम	**श्री अशोक सुरेका** राम मंदिर के नजदीक, बोंगाई गाँव, असम
श्री बिनीत सुरेका मेन रोड, बड़ा बाजार बोंगाईगाँव, असम	**श्री विश्वनाथ अग्रवाल** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री मनोज हरलालका** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री नटवर लाल शर्मा** मेन रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री निर्मल डरगर** ए.ओ.सी. रोड, बोंगाईगाँव, असम
श्री पारस नाथ दुग्गड़ ए.ओ.सी. रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री पवन गुप्ता** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री प्रमोद हरलालका** हथगोला बाजार, बोंगाईगाँव, असम	**श्री प्रेमचंद बैद्य** ए.ओ.सी. रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री पुखराज नाहटा** मेन रोड, बोंगाईगाँव, असम
श्री राजेन्द्र हरलालका छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री राजेश अगरवाला** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री राकेश अगरवाला** मेन रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री रामअवतार माहेश्वरी** मेन रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री रामअवतार पारीक** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम
श्री रंजीत सुरेका मेन रोड, बड़ा बाजार, बोंगाईगाँव, असम	**श्री संतोष अग्रवाल** छापागुड़ी रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री सुरेन्द्र लुणावत** मेन रोड, बेंगाईगाँव, असम	**श्री सुशील बैद्य** ए.ओ.सी. रोड, बोंगाईगाँव, असम	**श्री उमेद बंथिया** ए.ओ.सी. रोड, बोंगाईगाँव, असम

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 28th February 2022
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com